

“तन्त्र चित्रों में प्रयुक्त प्रतीक”

कंचन, प्रो० एम० एस० मावड़ी

शोधार्थी, प्रोफेसर

दृश्यकला संकाय एवं चित्रकला विभाग

डी०एस०बी० परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय,

नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

भारतीय कला एवं संस्कृति की समृद्ध परम्परा में तन्त्र चित्रण एक विशिष्ट दृश्य एवं प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के रूप में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। तान्त्रिक चित्रों में प्रयुक्त प्रतीक धार्मिक एवं आध्यात्मिक अवधारणाओं को दृश्य रूप प्रदान करते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में तन्त्र चित्रों में प्रयुक्त प्रमुख प्रतीकों के प्रतीकात्मक अंकन, उनके अर्थ तथा कलात्मक स्वरूप का अध्ययन किया गया है, जिसके अन्तर्गत तन्त्र की संकल्पना, यन्त्र की संरचना तथा तन्त्र चित्रों में प्रयुक्त ज्यामितीय आकृतियों, प्रतीकों तथा बीजमन्त्रों का विश्लेषण किया गया है। प्राचीन काल से विचारों एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति का अत्यन्त लोकप्रिय एवं सशक्त माध्यम कला-प्रतीक ही रहे हैं। भारतीय कला में यह माध्यम प्रतीक रूप में दृष्टिगत होते हैं। यह कला प्रतीक भारतीय कला की वर्णमाला कहे जा सकते हैं। विभिन्न विचारों, परम्पराओं, मान्यताओं एवं विश्वासों को इन प्रतीकों ने साकार कर दिया है। तन्त्र प्रक्रिया में रचित प्रतीकात्मक आकृतियों को यन्त्र की संज्ञा दी जाती है। इन यन्त्रों के निर्माण में ज्यामितीय आकृतियों, प्रतीकों, चिन्हों एवं संकेतों का प्रयोग किया जाता है। तन्त्र एक ऐसी आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विधा है जिसमें आध्यात्मिक तत्व समाहित होते हैं। शोधपत्र में श्रीयन्त्र की संरचना का विशेष रूप से विश्लेषण करते हुए उसमें प्रयुक्त प्रतीकों का अध्ययन किया गया है। तन्त्र चित्रों में निहित प्रतीक भारतीय सांस्कृतिक एवं कलात्मक विरासत के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

बीज शब्द : तन्त्र कला, तन्त्र चित्र, यन्त्र, प्रतीक, ज्यामितीय आकार, पद्म श्रीयन्त्र, भारतीय कला।

शोध का उद्देश्य

तान्त्रिक कला के अन्तर्गत निर्मित यन्त्र चित्रों में प्रयोग होने वाले प्रतीक के प्रतीकात्मक स्वरूप का अध्ययन कर उसके अर्थ, कलात्मक तथ्य एवं प्रतीकात्मकता को प्रस्तुत करना है।

शोध विधि

इस शोधपत्र में मुख्य रूप से प्राथमिक स्रोत के माध्यम से तथ्यों को एकत्रित करने का प्रयास किया गया है एवं द्वितीयक स्रोत के माध्यम से तन्त्र चित्रों में अंकित प्रतीकों के प्रतीकात्मक अंकन को वर्णित करने का प्रयत्न किया गया है।

भारतीय संस्कृति में तान्त्रिक परम्परा अत्यधिक प्राचीन एवं महत्वपूर्ण मानी जाती है। भारतीय संस्कृति में भगवान शिव तथा शक्ति से सम्बन्धित अनेकों मन्दिरों का क्षेत्र तन्त्र शक्ति से प्रभावित माना जाता है। भारत में स्थित कामाख्या देवी मन्दिर तथा चौसठ योगिनी मन्दिर अनेक तन्त्र सम्बन्धित कार्यों को पूर्ण करने तथा तान्त्रिक साधना हेतु अत्यधिक प्रसिद्ध है। भगवान शिव तान्त्रिकों के आराध्य देव हैं क्योंकि शिवा का द्वित्व एवं शिव का एकत्व ही तन्त्र का वर्णनीय विषय है। सांसारिक मोह को त्याग कर शिवतत्त्व में विलीन होने का मार्ग साधना है। साधना ही आत्म दर्शन का मार्ग है। तान्त्रिक साधना में तन्त्र, मन्त्र तथा यन्त्र इन तीनों का समन्वय ही आत्मिक ज्ञान को प्राप्त किया जा सकता है।

‘तन्त्र’ शब्द संस्कृत भाषा की ‘तन्’ धातु से व्युत्पन्न माना जाता है, जिसका अर्थ विस्तार करना अथवा विस्तृत करना है। ‘त्र’ का सम्बन्ध साधना से माना जाता है। इस प्रकार तन्त्र का अभिप्राय ज्ञान के साधन एवं उसके विस्तार की प्रक्रिया से ग्रहण किया जा सकता है। इस दृष्टि से तन्त्र केवल एक धार्मिक पद्धति अथवा जीवन की रहस्यमय साधना मात्र नहीं है, बल्कि यह जीवन के अनुभव को व्यवस्थित एवं अनुशासित करने वाली साधन पद्धति है। जिसके माध्यम से मनुष्य अपने भीतर निहित आध्यात्मिक एवं चेतनात्मक शक्तियों का विकास कर सकता है।

तन्त्र साधना का प्रचलन प्राचीन काल से भारतीय धार्मिक परम्परा का महत्वपूर्ण अंग रहा है। सिन्धुघाटी की सभ्यता से प्राप्त योगी की प्रतिमा एवं मातृत्व भाव को अभिव्यक्त करने वाली आकृतियों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उस काल के लोग किसी न किसी प्रकार की तान्त्रिक विधियों से परिचित रहे होंगे। अनुष्ठानों एवं रहस्यात्मक साधना पद्धतियों का प्रचलन समय के साथ-साथ प्राचीन मिश्र, मेसोपोटामिया, यूनान एवं भारत जैसी प्राचीन सभ्यताओं में भी व्यापक रूपों में विद्यमान रहा है।

भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में कलात्मक अंकन एवं प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति की परम्परा का विशेष महत्व है। जादू-टोना, तन्त्र-मन्त्र विषयक विश्वास सम्पूर्ण भारत में अत्यधिक प्रचलित थे एवं आज भी इसका प्रभाव ग्रामीण अंचलों में देखा जा सकता है। भूत-प्रेतों को वशीभूत करने में यहाँ के लोगों को अनेक सिद्धियाँ प्राप्त हैं। इसी परम्परा के अर्न्तगत तंत्र चित्रण की कला का विकास हुआ, जिसमें विभिन्न प्रतीकों, ज्यामितीय संरचनाओं, देवी-देवताओं तथा पुष्पात्मक रूपांकनों के माध्यम से तांत्रिक एवं आध्यात्मिक अवधारणाओं को दृश्य रूप प्रदान किया गया। स्थानीय जनसाधारण की कल्याणमयी एवं लोकमंगल अभिव्यक्तियाँ भी इन चित्रण परम्परा में दृष्टिगोचर हुई हैं।

‘सृष्टि के प्रारम्भ में ही त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) ने तंत्र से सम्बन्धित कुछ सूत्र निर्धारित कर लिये थे। ब्रह्मा ने ध्वनि विज्ञान के मूल सिद्धान्तों को आधार बनाकर ‘ऊँ’ की रचना की। ब्रह्मा द्वारा संकल्पित इस ओंकार से मंत्र सृजन हुआ। भगवान विष्णु ने आकारों के रूप में (आड़ी, तिरछी, सीधी, गोल व सपाट) रेखाओं के माध्यम से यंत्रों की रूप-रेखा निर्मित की। ब्रह्मा द्वारा ‘मंत्र’ एवं विष्णु द्वारा ‘यंत्र’ की संरचना हो जाने पर शिवजी ने ‘तंत्र’ की रचना की। मंत्र से ध्वनि, यंत्र से आकार एवं तंत्र से तकनीक विकसित हुई। इन तीनों के सामंजस्य से एक शक्ति सम्पन्न व्यवस्था का निर्माण हुआ, जो व्यवहार में प्रभावशाली एवं उपयोगी सिद्ध हुई।’ (मावड़ी, मोहन सिंह 2016)

संस्कृत शब्द ‘यंत्र’ की उत्पत्ति ‘यम’ धातु से हुई है जिसका अर्थ विशेष तत्व, वस्तु अथवा अवधारणा में निहित ऊर्जा को बनाये रखना, धारण करना या समर्थन करना है। अपने पहले अर्थ में यंत्र किसी भी यांत्रिक युक्ति को संदर्भित कर सकता है जिसका उपयोग किसी उद्यम की सहायता के लिए किया जाता है। इस अर्थ में एक यंत्र किसी भी प्रकार की मशीन या उपकरण हो सकता है जैसे- वास्तुकला, खगोल, विज्ञान, रसायनशास्त्र, युद्ध एवं मनोरंजन में प्रयोग किया जाता है। (Khanna, Madhu, 1997)

किसी भी प्रकार के कष्ट, उपचार अथवा निवारण हेतु तंत्र प्रक्रिया को माध्यम बनाया जाता है। तंत्र प्रक्रिया में रचित प्रतीकात्मक आकृतियों को यन्त्र की संज्ञा दी जाती है। इन यन्त्रों के निर्माण में ज्यामितीय आकृतियों, प्रतीकों, चिन्हों एवं संकेतों का प्रयोग किया जाता है। तंत्र एक ऐसी आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विधा है जिसमें आध्यात्मिक तत्व समाहित होते हैं। इसमें प्रयुक्त प्रतीकों का चित्रण उन विशेष शक्तियों को इंगित करता है जो समाज के लिए हितोपयोगी सिद्ध होते हैं।

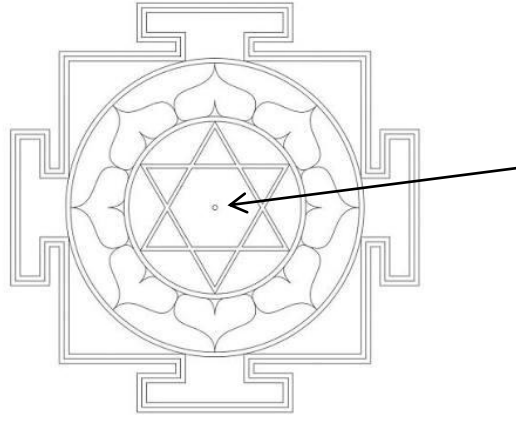
कोशकार आपटे के अनुसार यन्त्र एक रहस्यमय, ज्योतिष का रेखांकन है। विभिन्न रेखाओं, कोणों, त्रिभुजों, चतुर्भुजों, बिन्दुओं एवं पद्म दलों आदि के संयोजन द्वारा विविध प्रकार के ज्यामितीय चित्रों के रूप में यन्त्रों का निर्माण किया जा सकता है। इसमें अनेक स्थानों पर कुछ विशिष्ट वर्णों, अक्षरों एवं शब्दों का भी अंकन किया जाता है। बाह्य दृष्टि से यन्त्र एक सामान्य रेखाचित्र के समान प्रतीत हो सकता है, किन्तु धार्मिक एवं तान्त्रिक परम्परा में इसका विशिष्ट आध्यात्मिक एवं सांकेतिक महत्व माना जाता है। यह किसी विशिष्ट देवी-देवता के शक्ति तत्व का सांकेतिक रूप होता प्रस्तुत करता है।

प्राचीन काल से विचारों एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति का अत्यन्त लोकप्रिय एवं सशक्त माध्यम कला-प्रतीक ही रहे हैं। ‘भारतीय कला में यह माध्यम प्रतीक रूप में दृष्टिगत होते हैं। यह कला प्रतीक भारतीय कला की वर्णमाला कहे जा सकते हैं। विभिन्न विचारों, परम्पराओं, मान्यताओं एवं विश्वासों को इन प्रतीकों ने साकार कर दिया है।’ (श्रीवास्तव, ए० एल०, 1999) इन प्रतीकों के समन्वय से ही तन्त्र कला में यन्त्र चित्रों को आकार दिया गया है।

तन्त्र चित्रों के निर्माण में गहरे आध्यात्मिक एवं ब्रह्मांडीय रहस्यों को दर्शाने के लिए विशिष्ट ज्यामितीय आकृतियों एवं प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है, जिन्हें तन्त्र साधना में ऊर्जा का केन्द्र माना जाता है। तन्त्र चित्रों में प्रयोग किए जाने वाले प्रतीक इस प्रकार हैं-

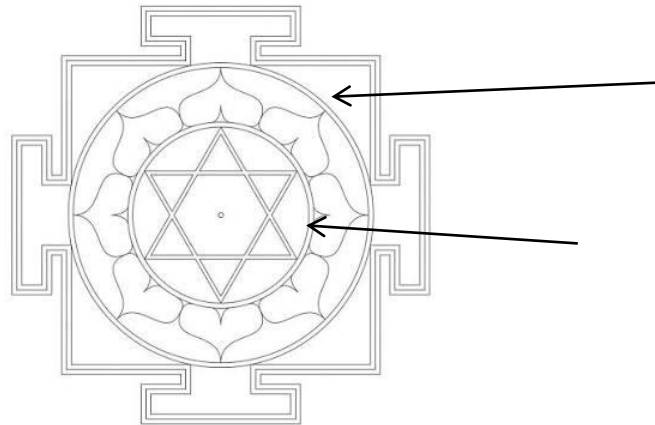
1- ज्यामितीय आकृतियाँ

- बिन्दु – बिन्दु किसी भी रचना का प्रारम्भिक स्रोत है। बिन्दु के ही क्रमिक विस्तार से रेखा का निर्माण होता है। यह तन्त्र चित्र के केन्द्र में स्थित ब्रह्मांड की उत्पत्ति का मूल स्रोत है। तन्त्र में बिन्दु को अन्तिम रूप माना जाता है सम्पूर्ण संसार इसी एक बिन्दु से उद्भूत होता है एवं अन्त में इसी महाशून्य में विलीन हो जाता है। शून्य परमशिव, परमपुरुष तथा परमब्रह्म का प्रतीक है। इस बिन्दु रूपी शून्य एवं रेखाओं के संयोजन से विस्तार होता है। इस विस्तार का रूप नाद की अभिव्यक्ति कर मन्त्र तथा, गणितीय रूप ग्रहण कर यन्त्र का निर्माण करता है। तन्त्र चित्रों में प्रयुक्त यन्त्र में बिन्दु ब्रह्माण्ड में व्याप्त एक अखण्ड अनश्वर सत्ता का बोध करता है। तन्त्र साधना में यह बिन्दु अन्तिम पड़ाव है। इस पर ध्यान केन्द्रित कर साधक परमात्मा में विलीन हो जाता है। श्री यन्त्र में बाहरी वर्ग से प्रारम्भ हुई यात्रा इस बिन्दु पर आकर समाप्त हो जाती है एवं आन्तरिक पूर्णता को प्राप्त करती है।



चित्र सं० 1- तन्त्र चित्र में बिन्दु

- **वृत्त** – वृत्त की संरचना में कोई प्रारम्भिक एवं अन्तिम बिन्दु नहीं होता, यह दर्शाता है कि संसार में आत्मा एवं ऊर्जा कभी समाप्त नहीं होती, बल्कि वृत्त के समान घूमती रहती है। यह तन्त्र चित्रों में समय के चक्र, ब्रह्मांड की निरन्तरता एवं चेतना के विस्तार का प्रतीक है। अधिकांश यन्त्र चित्रों में एक से अधिक वृत्त अंकित होते हैं जो मानव चेतना की विभिन्न परतों को दर्शाते हैं। यन्त्र में बाहरी वृत्त स्थूल जगत तथा अन्दर का वृत्त सूक्ष्म जगत का प्रतिनिधित्व करता है। श्री यन्त्र में वृत्त को चौकोर बाहरी सीमा जिसे भुपुर कहा जाता है, के ठीक भीतर निर्मित किया जाता है। यह वृत्त साधना क्षेत्र के लिए सुरक्षा कवच का कार्य करता है तथा साधक की आन्तरिक ऊर्जा को केन्द्रित करता है।



चित्र सं० 2- तन्त्र चित्र में वृत्त

- **वर्ग** – तन्त्र चित्रों में वर्ग आकृति को अत्यधिक पवित्र एवं आधारभूत तत्व माना जाता है, जिसे भुपुर कहा जाता है। यह यन्त्र की बाहरी सीमा होती है, जिसमें अधिकांशतः चार द्वार दर्शाये जाते हैं जो चारों दिशाओं को दर्शाते हैं। यह चार पवित्र द्वार पृथ्वी तत्व एवं भौतिक संसार का प्रतिनिधित्व करता है। तन्त्र में वर्ग को पवित्र घेरे के रूप में जाना जात है, जिसके अन्दर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड समाहित होता है। यह भौतिक संसार से आध्यात्मिक संसार में प्रवेश करने का द्वार है। यन्त्र में वर्ग स्थिरता तथा संतुलन का प्रतीक भी है जो साधक के मन को भटकने से रोककर एक जगह केन्द्रित करने में सहायता प्रदान करता है।

श्री यन्त्र में अंकित भुपुर में तीन रेखाएं होती हैं, जिसे त्रैलोक्य मोहन चक्र कहा जाता है। त्रैलोक्य मोहन चक्र का अर्थ तीनों लोकों को मोहित अथवा आकर्षित करने वाला चक्र है। इस वर्ग की तीनों रेखाओं में बाहरी रेखा अष्ट सिद्धियों, मध्य रेखा सप्त मात्रिकाओं तथा भीतरी रेखा अष्ट मुद्राओं के क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती हैं।



चित्र सं० 3- तन्त्र चित्र में वर्ग (भुपुर)
चित्रस्रोत - <https://pin.it/10xlnr2t2>

- **त्रिकोण** – तन्त्र चित्रों में त्रिकोण सर्वाधिक शक्तिशाली एवं महत्वपूर्ण अंग है। त्रिकोण व्यक्ति के पिण्ड में निहित सत्य का ब्रह्माण्ड के साथ समन्वय करने का प्रतीक है। तन्त्र चित्रों में दो प्रकार के त्रिकोण देखे जाते हैं—

▼ नीचे की ओर झुका त्रिकोण – यह आदि शक्ति, नारी ऊर्जा, योनि, जल तत्व एवं प्रकृति को दर्शाता है, जो ब्रह्माण्डीय ऊर्जा को नीचे की ओर भौतिक संसार में प्रवेश करने को दर्शाता है।

▲ ऊपर की ओर उठा त्रिकोण – यह भगवान शिव, पुरुष ऊर्जा, लिंग एवं अग्नि तत्व को दर्शाता है, जो साधक की चेतना को ऊपर उठने तथा परमात्मा में विलीन होने को दर्शाता है।

इन दोनों त्रिकोण के समन्वय से षट्कोण का निर्माण होता है, जो ऊर्जा का सन्तुलन एवं स्त्री एवं पुरुष के मिलन को दर्शाता है। इन दोनों (स्त्री तत्व तथा पुरुष तत्व) का समन्वय ही संसार को गतिशील रखने का आधार है। यह दोनों तत्व अपनी गुण स्थिति में संसारिक माया के प्रतीक भी है। स्त्री रजोगुण की प्रतीक है। स्त्री के रजस्वला होने में रजोगुण प्रकट होता है, जो सृजन करता है। रजस् प्रवृत्ति के पश्चात् ही स्त्री सृजन करने की क्षमता प्राप्त करती है। पुरुष सत्व गुण प्रधान है, जो निर्लिप्त है। उसी प्रकार पुरुष सृजन का साधन है। गुणों का यह त्रय बन्धन है, तन्त्र इन बन्धनों से मुक्त होने की विधि बताता है। त्रिकोण की इस आकृति पर ध्यान केन्द्रित करने से चक्रों में छिपी कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत होती है।



चित्र सं० 4- तन्त्र चित्र में त्रिकोण
चित्रस्रोत - <https://pin.it/10xlnr2t2>

2- प्राकृतिक प्रतीक

पद्मदल- यन्त्र निर्माण में वृत्तों के बाहरी ओर पद्मदल के विभिन्न रूप अष्टदल, द्वादशदल, षोडशदल आदि अंकित किये जाते हैं। 'तान्त्रिक कला में आत्मिक विकास और चेतना के प्रसार का सशक्त प्रतीक पद्म को माना जाता है। पद्म के माध्यम से साधक अविद्या के अन्धकार को नष्ट करके आन्तरिक ज्योति प्राप्त करता है।' (मिश्र, रवीन्द्र नाथ ,2003) पद्मदल की पवित्रता, स्वच्छता व सौभाग्यशालिता तंत्र विधान में श्रेष्ठतम मानी जाती है। पद्मदल का उल्लेख तंत्र शास्त्रों में मिलता है। आध्यात्मिक दृष्टि से भी पद्मदल की महत्ता अलौकिक एवं प्रेरणादायक रही है। (मिश्र, रवीन्द्र नाथ ,2003)

सृष्टि सृजन के समय भगवान विष्णु की नाभि से प्रस्फुटित कमल पर ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई तथा उनके द्वारा सृष्टि का सृजन किया गया। उसी प्रकार स्त्री का भी सृजन नाभि से ही प्रारम्भ होता है तथा उसका प्रस्फुटन नाभि के नीचे के भाग में स्थित होता है। नाभि को शरीर में ऊर्जा एवं सृजन का महत्वपूर्ण केन्द्र माना जाता है। इसी कारण तान्त्रिक परम्परा में मानव शरीर एवं ब्रह्माण्ड की संरचना के मध्य समानता बताई जाती है। तन्त्र शास्त्र में तन्त्रराज कहे जाने वाले श्रीयन्त्र की रचना में अष्टकमल विद्यमान होता है, जो शक्ति, सृजनता एवं नारी ऊर्जा का प्रतीक है।

षोडशदल पद्म शक्ति की आद्या शक्ति 'चन्द्रा' का प्रतीक है जो 16 कलाओं में पूर्णता प्राप्त करता है। षोडशदल कमल पूर्णता, ऊर्जा का विस्तार का प्रतीक है। इसलिए तान्त्रिक प्रतीक विधान में अष्ट एवं षोडश पद्म दल केवल ज्यामितीय आकृति नहीं, अपितु शरीर, ऊर्जा, सृजन एवं पूर्णता के प्रतीकात्मक स्तर माने जाते हैं।



चित्र सं० 5- तन्त्र चित्र में पद्मदल
चित्रस्रोत - <https://pin.it/10xlnr2t2>

3- अक्षर एवं बीज मन्त्र - तन्त्र चित्रों एवं यन्त्रों के मध्य विशिष्ट स्थानों में बीज मन्त्र अंकित किये जाते हैं, जो ध्वनि तरंगों और यन्त्र की आध्यात्मिक ऊर्जा को जाग्रत करते हैं। यह बीज मन्त्र यन्त्र की आत्मा या प्राण माने जाते हैं। यन्त्र चित्रों में अंकित ज्यामितीय प्रतीक यन्त्र का शरीर एवं उसमें अंकित मन्त्र यन्त्र की चेतना कहे जा सकते हैं। शब्दकोश के अनुसार यन्त्र "अक्षरों(वर्णों) अथवा अंक-संख्याओं से संयुक्त कोष्ठक का आकार विशेष, जो वस्तुतः देव-स्थान(मन्दिर) का प्रतीक होता है, और जिसमें देवता वास करते हैं।" (शुक्ल, शत्रुघ्नलाल, 2002)

यभी यन्त्र चित्रों में निश्चित देवी-देवताओं से सम्बन्धित अक्षर एवं बीज मन्त्रों का अंकन किया जाता है। यन्त्र चित्र में अंकित मन्त्रों द्वारा यन्त्र को जाग्रत किया जाता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ध्वनि से निर्मित हुआ है जिसे नाद कहा जाता है। यन्त्र में भिन्न-भिन्न स्थानों पर विशेष अक्षरों को अंकित किया जाता है जो मूल शक्ति को यन्त्र में बांधने का कार्य करते हैं। इन बीज मन्त्रों के भीतर देवी-देवताओं की सम्पूर्ण शक्ति समाहित होती है। तन्त्र चित्रों में ऊँ, श्रीं, ह्रीं, क्लीं, क्रीं आदि बीज मन्त्र लिखे जाते हैं।

इसी प्रकार शरीर चक्रों को सक्रिय करने हेतु यन्त्र चित्रों में उनसे सम्बन्धित बीज मन्त्र या अक्षर का प्रयोग होता है। यथा - मूलाधार के लिए लं, स्वाधिष्ठान के लिए वं, मणिपुर के लिए रं, अनाहत के लिए यं, विशुद्ध के लिए हं, आज्ञा के लिए उँ तथा सहस्रार के लिए ऊँ ।



चित्र संख्या 6 – यन्त्र में अंकित बीज मन्त्र
चित्रस्रोत – <https://pin.it/10xlnr2t2>

इस प्रकार इन ज्यामितीय, प्राकृतिक एवं अक्षरों के सम्मिश्रण द्वारा सभी प्रकार के तन्त्र-यन्त्र चित्रों का निर्माण किया जाता है। यन्त्र में अंकित प्रत्येक प्रतीक किसी निश्चित अर्थ को प्रतिबिम्बित करते हैं। सभी यन्त्र चित्रों का आकार भिन्न होता है। इन सभी प्रतीकों को श्रीयन्त्र चित्र के माध्यम से दर्शाया गया है।

श्री यन्त्र

श्री चक्र यन्त्र तन्त्र विद्या के अर्न्तगत प्रचलित एक अत्यन्त प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण यन्त्र है। श्री चक्र यन्त्र में समस्त शक्तियों का सांकेतिक एवं तात्त्विक समावेश निहित रहता है। श्री चक्र यन्त्र को समस्त यन्त्रों का 'शिरोमणि' अथवा 'यन्त्रराज' भी कहा जाता है। तान्त्रिक परम्परा के अनुसार, जहाँ भी श्रीयन्त्र विद्यमान रहता है, वहाँ दुःख, दरिद्रता का नाश कर समृद्धि एवं सम्पन्नता का विस्तार करता है। इसकी प्रभावकारिता के संबंध में यह मान्यता है कि यदि इसका विधिपूर्वक निर्माण एवं प्रतिष्ठापन किया जाय, तो साधक मात्र दर्शन से ही आध्यात्मिक एवं लौकिक लाभ प्राप्त कर लेते हैं। (शुक्ल, शत्रुघ्न लाल, 1987)

श्री यन्त्र का निर्माण नव त्रिकोणों तथा परस्पर अंतर्स्थित चक्रों की संरचना से होता है। जिसमें एक चक्र दूसरे चक्र के अन्दर स्थित होता है। प्रत्येक चक्र में देवी के नव सृजित नामों के आधार पर पूजा-अर्चना की जाती है। यन्त्र में स्थित नौ त्रिकोणों में चार त्रिकोणों के शीर्ष ऊपर की ओर तथा पाँच त्रिकोणों के शीर्ष नीचे की ओर अभिमुख होते हैं। ऊपर की ओर अभिमुख चार त्रिकोणों को श्रीकण्ठ अथवा शिवतत्त्व का प्रतीक माना जाता है, जबकि नीचे की ओर अभिमुख पाँच त्रिकोण शक्ति तत्त्व का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन समस्त त्रिकोणों की उत्पत्ति मूल प्रकृति एवं शिव बिन्दु से मानी जाती है। नौवीं मूल प्रकृति को स्वयं प्रकृति का स्वरूप माना गया है, जबकि शेष आठ की गणना विकृति के अंतर्गत की जाती है।

श्रीचक्र की संरचना में स्थित इन नव आवरणों के नाम इस प्रकार हैं— 1 भूपुर, 2 सोलहदल 3 अष्टदल 4 चौदह कोण 5 बहिर्दशर 6 अन्तर्दशर 7 अष्टार 8 त्रिकोण एवं 9 बिन्दु। (नारायण, कपिल देव, 2009)

इस यन्त्र में माँ लक्ष्मी की सभी शक्तियों को समाहित किया जाता है। आदिशक्ति की सभी शक्तियों से पूर्ण यह श्रीयन्त्र सम्पूर्ण विश्व के लिए शुभ फलदायी होता है। श्रीयन्त्र को पूजा स्थलों एवं मन्दिरों में चित्रांकित किया जाता है।

श्री यन्त्र चित्र निर्माण विधि –

श्री चक्र यन्त्र के निर्माण के लिए यन्त्राकार के मध्य में एक वृत्त का अंकन किया जाता है। इसके आन्तरिक भाग में अनुलोम एवं विलोम क्रम में स्थित त्रिभुजों को हरे तथा लाल रंग से चित्रित किया जाता है। वृत्त के बाह्य भाग में अष्टदल पद्म का अंकन लाल रंग से किया जाता है। इन पद्मदलों के बाह्य भाग में एक दीर्घ वृत्त का निर्माण कर, उसके बाहरी ओर षोडश(16) पद्म दलों को हरे रंग से अंकित किया जाता है। पद्मदलों के बाहर त्रिरेखीय वृत्त चित्रित किया जाता है एवं वृत्त के बाहर यन्त्राकार को त्रिरेखीय अभिरूप में चित्रित किया जाता है।



चित्र संख्या 7 – श्री यन्त्र

चित्रस्रोत <https://www.himalayanyogainstitute.com/wp-content/uploads/2025/09/Shri-Yantra.png>

निष्कर्ष

तन्त्र धार्मिक अथवा आध्यात्मिक साधना पद्धति के साथ-साथ भारतीय ज्ञान परम्परा, प्रतीक विज्ञान तथा दृश्य अभिव्यक्ति की एक समृद्ध एवं विकसित प्रणाली है। तन्त्र चित्रों में प्रयुक्त विभिन्न ज्यामितीय आकृतियाँ, प्राकृतिक प्रतीक, बीज मन्त्र तथा यन्त्र रचनाएँ मानव चेतना, ब्रह्माण्डीय शक्तियों एवं आध्यात्मिक अनुभूतियों का दृश्य रूपान्तरण करती हैं। तन्त्र चित्रों में प्रयुक्त बिन्दु, वृत्त, वर्ग एवं त्रिकोण जैसे ज्यामितीय प्रतीक सृष्टि, ऊर्जा, प्रकृति तथा स्त्री व पुरुष तत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसी प्रकार पद्म तान्त्रिक चित्रण में चेतना, पवित्रता एवं आन्तरिक जागरण का प्रतीक है।

तन्त्र चित्रों में मुख्यतः श्रीयन्त्र का अध्ययन यह प्रमाणित करता है कि तांत्रिक कला में यन्त्र रेखाओं एवं आकृतियों का संयोजन नहीं, अपितु यह समस्त संसारिक शक्तियों, शिव-शक्ति के समन्वय तथा आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रतिरूप है। श्रीयन्त्र की संरचना में गणित, ज्यामितीय, दर्शन एवं आध्यात्म का अद्भुत समन्वय दृष्टिगोचर होता है। तन्त्र चित्रों में प्रयोग किए जाने वाले सभी प्रतीकों का विशेष महत्व है, जो किसी विशेष रूप का प्रतिनिधित्व करते हैं। तन्त्र चित्रों में प्रयुक्त प्रतीक भारतीय कला एवं संस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं।

सन्दर्भग्रन्थसूची-

- 1- मावड़ी, मोहन सिंह (2016) कुमाऊँ के तंत्र चित्रों का अध्ययन (शोधप्रबन्ध), (छत्तीसगढ़) इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़, पृ० 15
- 2- Khanna, Madhu, (1997) Yantra: The Tantric Symbol of Cosmic Unity, Singapour, Thames and Hudson, Pg- 07
- 3- श्रीवास्तव, ए० एल० (1999) भारतीय कला प्रतीक, इलाहाबाद, उमेश प्रकाशन, पृ० 14
- 4- मिश्र, रवीन्द्र नाथ (2003), तन्त्र कला में प्रतीक, इलाहाबाद, राका प्रकाशन, पृ० 40
- 5- मिश्र, रवीन्द्र नाथ (2003), तन्त्र कला में प्रतीक, इलाहाबाद, राका प्रकाशन, पृ० 15
- 6- शुक्ल, शत्रुघ्नलाल (2002) भारतीय तन्त्र विद्या, मथुरा, हिन्दी सेवा सदन, पृ० 35
- 7- शुक्ल, शत्रुघ्न लाल (1987) श्री तन्त्रम् (धन-प्रदायक यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र), मथुरा, हिन्दी सेवा सदन, पृ० 70
- 8- नारायण, कपिल देव (2009) तन्त्रराजतन्त्रम्, वाराणसी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन पृ० 7